215hi06

6

भंडारण सेवाएं

हम अपने दैनिक जीवन में विविध प्रकार का खाना खाते हैं। कुछ लोग अपने मुख्य भोजन में चावल खाते हैं तो कुछ रोटी। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि ये चावल अथवा गेहूं, जिनसे ये खाने के पदार्थ तैयार होते हैं, कहां से आते हैं? जैसा कि हम जानते हैं कि ये अनाज पूरे साल पैदा नहीं होते। लेकिन हम इन्हें रोज खाते हैं। तो फिर किसान किस तरह से हमें इन अनाजों की निरंतर आपूर्ति करते रहते हैं? आप निश्चित रूप से सोचते होंगे कि वे इन अनाजों का एक उचित स्थान पर संग्रह करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर हमें आपूर्ति करते हैं। जी, आप बिल्कुल ठीक सोच रहे हैं। इनका एक विशेष मौसम और विशेष क्षेत्र में उत्पादन होता है। इसलिए इन अनाजों का उचित तरीके से संग्रहण आवश्यक होता है। हमारे घरों में उपयोग के लिए इनका सीमित संग्रहण किया जा सकता है। लेकिन कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां इनका सही तरीके से और बड़ी मात्रा में भंडारण किया जा सकता है। इस पाठ में हम उन स्थानों अर्थात भंडारगृहों के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- भंडारण का अर्थ बता सकेंगे;
- भंडारण की आवश्यकता की पहचान कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के भंडारगृहों की पहचान कर सकेंगे;
- आदर्श भंडारगृहों की विशेषताएं बता सकेंगे;
- भंडारगृह की कार्य प्रणाली का उल्लेख कर सकेंगे; और
- भंडारगृह के लाभों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

6.1 भंडारण का अर्थ

हमें दैनिक जीवन में विविध प्रकार की वस्तुओं की आवश्कता होती है। हम उनमें से कुछ तो थोक में खरीद सकते हैं और उनका अपने घर में संग्रहण कर सकते हैं। इसी प्रकार व्यवसायियों को भी विविध प्रकार की वस्तुओं की आवश्यकता होती है। उनमें से कुछ वस्तुएं हमेशा उपलब्ध नहीं होती। लेकिन उन्हें बिना किसी बाधा के उन वस्तुओं की पूरे साल जरूरत

होती है। चीनी मिल का ही उदाहरण ले लीजिए। आप तो जानते ही हैं कि गन्ने का उत्पादन साल के एक विशेष मौसम में ही होता है। लेकिन चीनी की खपत पूरे साल होती है, इसलिए गन्ने आपूर्ति की पूरे साल आवश्यकता होती है। लेकिन ऐसा कैसे संभव हो सकता है? ऐसे में गन्ने के उचित मात्रा में भंडारण की आवश्यकता होती है। इसके अलावा चीनी के उत्पादन के बाद, इसके वितरण एवं विक्रय के लिए समय चाहिए। इस प्रकार कच्चे माल तथा तैयार माल दोनों के लिए संग्रहण की आवश्यकता पड़ती है। किसी भी वस्तु के उत्पादन से लेकर खपत तक उसके समुचित संग्रहण की आवश्यकता पड़ती है। जब संग्रहण बड़ी मात्रा में और सही विधी से वस्तुओं का रखरखाव किया जाता हैं, तो इस प्रक्रिया को भंडारण कहते हैं। ये वस्तुएं जहां रखी जाती है, उसे भंडार गृह कहते हैं। भंडार गृह के अधिकारी को 'भंडारगृह-देखभाल प्रभारी' कहते हैं।

मालो का भंडारण

भंडारण का अर्थ है वस्तुओं का बड़ी मात्रा में और समुचित तरीके से संग्रहण तथा आवश्यकतानुसार उन्हें उपलब्ध कराना। दूसरे शब्दों में कहें तो भंडारण का अर्थ है वस्तुओं का उनके उत्पादन अथवा खरीद के समय से लेकर उनकी बिक्री अथवा वास्तविक उपयोग के समय तक बड़ी मात्रा में रखना अथवा परीक्षण करना।

भंडारण एक महत्वपूर्ण व्यापार सहायक सेवा है। इसमें समय उपयोगिता का सृजन होता है, क्योंकि यह वस्तुओं के उत्पादन तथा उनके उपयोग के बीच समय के लिए सेतु का कार्य करती है।

6.2 भंडारण की आवश्यकता

निम्नलिखित कारणों से भंडारण आवश्यक होता है :

i) **मौसमी उत्पादन :** आप तो जानते ही हैं कि कृषि उत्पादों का उत्पादन साल के विशेष मौसमों में होता है, लेकिन उसकी खपत पूरे साल होती रहती है। इसलिए इन उत्पादों के समुचित भंडारण की आवश्यकता होती है, जहां से आवश्यकतानुसार इनकी आपूर्ति की जा सके।

ii) **मौसमी मांग :** कुछ ऐसी वस्तुएं होती हैं, जिनकी मौसम विशेष में ही मांग होती है, जैसे सर्दियों में ऊनी वस्त्र, बरसात में छाते आदि। लेकिन इन वस्तुओं का उत्पादन पूरे साल होता रहता है। इसलिए इन वस्तुओं के सही भंडारण की आवश्यकता होती है, जिससे कि सही समय पर इनकी आपूर्ति की जा सके।

iii) **बड़े पैमाने पर उत्पादन :** निर्मित वस्तुओं के मामले में आजकल ज्यादातर उत्पादन वर्तमान तथा भविष्य की मांग को ध्यान में रखते हुए कर लिया जाता है। ऐसे में निर्माता बड़े पैमाने पर उत्पादन करना चाहते हैं, क्योंकि बड़े पैमाने पर उत्पादन में लागत कम आती है। इन बड़ी मात्रा में उत्पादित वस्तुओं को तब तक समुचित

भंडारण की आवश्यकता पड़ती है, जब तक कि इनकी बिक्री न हो जाए।

iv) **तुरंत आपूर्ति :** औद्योगिक तथा कृषि दोनों प्रकार के उत्पादों का उत्पादन एक विशेष स्थान पर होता है, किंतु उनकी खपत पूरे देश में होती है। इसलिए इन वस्तुओं को खपत वाले स्थान के निकट रखना आवश्यक होता है, ताकि उपभोक्ता की आवश्यकता के अनुसार शीघ्र आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

v) **निरंतर उत्पादन :** औद्योगिक इकाइयों में निरंतर उत्पादन चलते रहने के कारण उन्हें निरंतर कच्चे माल की आवश्यकता होती है। इसलिए पर्याप्त कच्चे माल के भंडारण की आवश्यकता पड़ती है, ताकि आवश्यकता के अनुसार उनकी आपूर्ति की जा सके।

vi) **मूल्य में स्थायित्व :** बाजार में वस्तुओं का मूल्य स्थिर रखने के लिए भी उनके भंडारण की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि वस्तुओं की अनुपलब्धता की स्थिति में बाजार में वस्तुओं की कीमतें बढ़ सकती है। इसके अलावा अधिक उत्पादन तथा आपूर्ति से वस्तुओं की कीमतें गिरने की संभावना रहती है। भंडारण, आपूर्ति में संतुलन बनाए रखता है, जिससे मूल्यों में स्थिरता आती है।

पाठगत प्रश्न 6.1

निम्नलिखित में से कौन से कथन सही तथा कौन से गलत हैं :

i. भंडारण समय की बाधा को दूर करता है।
ii. भंडारण व्यापार संबंधी महत्वपूर्ण सहायक सेवा नहीं है।
iii. भंडारण का उद्देश्य वस्तुओं की अनुपलब्धता के समय अधिक आपूर्ति करना हो सकता है।
iv. भंडारण में मौसमी वस्तुओं का रखरखाव नहीं किया जाता।
v. बड़े पैमाने के व्यापार में भंडारण की आवश्यकता नहीं होती।
vi. भंडारण, कारखानों में निरंतर उत्पादन को सुनिश्चित करता है।

6.3 भंडारगृहों के प्रकार

आपने पढ़ा है कि भंडारण, विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के रखरखाव से आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार के भंडारगृह अस्तित्व में आए हैं। इनको निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

i. निजी भंडारगृह
ii. सार्वजनिक भंडारगृह
iii. सरकारी भंडारगृह
iv. बंधक भंडारगृह
v. सहकारी भंडारगृह

आइए, अब इनके बारे में विस्तार से जाने :

i) **निजी भंडारगृह :** जो भंडार गृह उत्पादकों अथवा निर्माताओं द्वारा साधारणतया अपने उत्पादों के संरक्षण हेतु चलाए जाते हैं, उन्हें निजी भंडार गृह कहते हैं। इन भंडार गृहों का निर्माण किसानों द्वारा अपने खेतों के समीप, व्यापारियों अथवा वितरकों द्वारा अपने व्यावसायिक केन्द्रों के समीप तथा विनिर्माताओं द्वारा अपने कारखाने के समीप किया जाता है। इनका डिजाइन तथा प्रदत्त सुविधाएँ वस्तुओं के भंडारण की प्रकृति पर निर्भर करती है।

ii) **सार्वजनिक भंडारगृह :** जिन भंडारगृहों का निर्माण आम जनता के उपयोग के लिए अथवा सार्वजनिक भंडारण के लिए किया जाता है, उन्हें सार्वजनिक भंडारगृह कहते हैं। इन भंडारगृहों में किराया देकर कोई भी व्यक्ति अपनी वस्तुओं का भंडारण कर सकता है। कोई व्यक्ति, साझेदारी फर्म अथवा कंपनी इनका स्वामी हो सकता है। ऐसे भंडारगृहों को चलाने के लिए सरकार से लाइसैंस की आवश्यकता होती है। ऐसे भंडारगृहों का संचालन सरकार भी करती है। इनका उपयोग विनिर्माता, थोक व्यापारी आयातक, निर्यातक तथा सरकारी एजेंसियां करती हैं।

iii) **सरकारी भंडारगृह :** ऐसे भंडारगृहों का स्वामित्व, प्रबंधान आदि केन्द्र अथवा राज्य सरकार, सार्वजनिक निगमों, स्थानीय निकायों आदि के हाथों में होता है। इन भंडारगृहों का उपयोग सरकारी तथा निजी, दोनों प्रकार की कंपनियां कर सकती हैं। भारत का केन्द्रीय भंडारण निगम, राज्य भंडारण निगम तथा भारतीय खाद्य निगम आदि ऐसी एजेंसियां है जो सरकारी भंडारगृहों का रखरखाव कर रही है।

iv) **बंधक भंडारगृह :** इन भंडार गृहों का स्वामित्व तथा प्रबंधन सरकार अथवा निजी एजेंसियों के हाथों में होता है। निजी बंधक भंडार गृहों के संचालन के लिए सरकार से लाईसेंस की आवश्यकता होती है। ऐसे भंडारगृहों में उन आयातित वस्तुओं का भंडारण किया जाता है जिन पर आयातकर नहीं चुकाया गया है। कर चुकाए बिना आयातित माल को आयातक बंदरगाह से नहीं ले जा सकते हैं और तब तक उन्हें इन भंडारगृहों में रखा जाता है जब तक कि उनपर लगा आयातकर न चुका दिया जाए। ऐसे भंडारगृह आमतौर पर गोदी प्राधिकरणों द्वारा समुद्र तटों के आसपास स्थापित किए जाते हैं।

v) **सहकारी भंडारगृह :** ऐसे भंडारगृहों का स्वामित्व, प्रबंध तथा नियंत्रण सहकारी समितियों के हाथों में होता है। इनमें समितियों के सदस्यों को मितव्ययी दर पर भंडारण की सुविधा उपलब्ध होती है।

6.4 आदर्श भंडारगृह के लक्षण

ऊपर आपने विभिन्न प्रकार के भंडारगृहों के बारे में पढ़ा। प्रत्येक भंडारगृह में वस्तुओं के भंडारण की समुचित व्यवस्था आवश्यक होती है। यदि निम्नलिखित विशेषताएं पाई जाती हैं, तो किसी भी भंडारगृह को आदर्श भंडार गृह कहा जा सकता है।

i. भंडारगृह को सुविधाजनक स्थान पर स्थित होना चाहिए, जैसे राजमार्गो, रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों तथा समुद्र तटों के निकट ताकि वस्तुओं को सरलता से चढ़ाया

उतारा जा सके।

ii. वस्तुओं को उतारने तथा चढ़ाने के लिए मशीनी उपकरणों का होना आवश्यक है। इससे न सिर्फ टूट-फूट कम होती है, बल्कि उतारने-चढ़ाने में खर्च भी कम पड़ता है।

iii. वस्तुओं के समुचित रखरखाव के लिए पर्याप्त स्थान होना चाहिए।

iv. फलों, अंडों, मक्खन आदि जैसी शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं के लिए भंडारगृहों में कोल्ड स्टोरेज की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

भंडारगृह

v. धूप, बारिश, हवा, धूल, नमी, कीड़ों आदि से बचाव के लिए समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

vi. भंडारगृहों के परिसर में पर्याप्त पार्किंग व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि वस्तुओं को आसानी से चढ़ाया-उतारा जा सके।

vii. वस्तुओं की चोरी को रोकने के लिए चौबीसों घंटे पहरेदारी होनी चाहिए।

viii. आग से होने वाले नुकसान से बचने के लिए भवन में समुचित आग निरोधक उपकरण उपलब्ध होने चाहिएँ।

पाठगत प्रश्न 6.2

कोष्ठक में दिए शब्दों में से उचित शब्द छांटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i. भारतीय खाद्य निगम _____ भंडारगृह का उदाहरण है। (सरकार, निजी, बंधक)

ii. सार्वजनिक भंडारगृहों का स्वामित्व _____ हाथों में होता हैं। (सरकारी, निजी, किसी भी व्यक्ति के)

iii. _____ भंडारगृह शुरू करने के लिए सरकार से लाइसेंस की आवश्यकता नहीं होती। (सरकारी, निजी)

iv. बंधक भंडारगृह आमतौर पर _____ के समीप स्थित होते हैं। (औद्योगिक क्षेत्रों, बंदरगाह, वाणिज्य केन्द्रों)

v. ऐसी वस्तुएं जिन पर आयात कर नहीं चुकाया गया है, उन्हें _____ भंडारगृहों में रखा जाता है। (सरकारी, निजी, बंधक)

6.5 भंडारगृह के कार्य

आपने पढ़ा कि भंडारगृह वस्तुओं का समुचित तथा सही विधि से परिरक्षण करते हैं। वे वस्तुओं को गर्मी, हवा, आंधी, नमी आदि से बचाते हैं तथा उनको टूट-फूट से होने वाली हानि से भी बचाते हैं। यह प्रत्येक भंडारगृह का मूलभूत कार्य होता है। आजकल भंडारगृह इनके अतिरिक्त अन्य कार्य भी करते हैं, जो निम्नलिखित हैं :

i) **वस्तुओं का भंडारण :** भंडारगृहों का मुख्य काम बड़ी मात्रा में वस्तुओं का भंडारण करना होता है। वस्तुओं का भंडारण उनके उत्पादन अथवा खरीद से लेकर उनकी खपत तक किया जाता है।

ii) **वस्तुओं का परिरक्षण :** भंडारगृह वस्तुओं को गर्मी, धूल, हवा नमी आदि से खराब होने से बचाते हैं। इनके पास विभिन्न वस्तुओं के लिए उनकी प्रकृति के अनुसार संग्रहण की व्यवस्था होती है। इससे भंडारण के कारण वस्तुओं के सड़ने, गलने आदि के कारण होने वाला नुकसान नहीं होता।

iii) **जोखिम उठाना :** वस्तुओं के भंडारण के समय भंडारगृह अधिकारी को भंडारगृह संबंधी सभी जोखिम उठानी होती है। एक बार जब कोई वस्तु भंडारगृह अधिकारी के हाथों में सौंप दी जाती है तो उसके बाद से सारा उत्तरदायित्व भंडारगृह अधिकारी का होता है। भंडारगृह में यदि वस्तुओं की क्षति होती हैं तो उसका उत्तरदायित्व भंडारगृह अधिकारी का होगा। वह वस्तुओं को उनकी सही अवस्था में लौटाने के लिए प्रतिबद्ध होता है। इसीलिए भंडारगृह चोरी, टूट-फूट के लिए भी उत्तरदायी भी होता है। इस प्रकार भंडारगृह इन सभी से वस्तुओं की रक्षा करता है।

भंडारगृह में माल का भंडारण

iv) **वित्तीय सुविधाएं प्रदान करना :** जब कोई व्यक्ति भंडारगृह को माल सौंपता है तो भंडारगृह उसको एक रसीद देता है, जो यह प्रमाणित करता है कि वस्तु

अथवा माल उसके पास है। इसके अतिरिक्त एक अधिपत्र भी देता है जिसे भंडारगृह देखरेख अधिकारी का अधिपत्र कहते हैं, यह एक अधिकार पत्र होता है तथा दस्तावेज के पीछे हस्ताक्षर कर इसे हस्तांतरित किया जा सकता है। इसके अलावा इस अधिपत्र को गिरवी रखकर कोई व्यवसायी, बैंक अथवा अन्य किसी वित्तीय संस्थान से ऋण प्राप्त कर सकता है। कुछ मामलों में भंडारगृह अधिपत्र गिरवी रखकर कुछ व्यवसायी भी अतिरिक्त व्यवसायियों को छोटी अवधि के ऋण उपलब्ध कराते हैं।

v) **प्रक्रमण :** कुछ उपभोक्ता वस्तुएं ऐसी होती हैं, जिन्हें बिना प्रक्रमण के उपयोग में नहीं लाया जाता। प्रक्रमण, उन्हें उपभोग के योग्य बनाता है। उदाहरण के लिए धन को पॉलिश किया जा सकता है। लकड़ी की सीजनिंग की जाती है आदि। कई बार भंडारगृह व्यवसायी की तरफ से यह सब जिम्मेदारी खुद भी उठाते हैं।

vi) **ग्रेडिंग तथा ब्रांडिंग :** निर्माताओं, निर्यातकों, थोक विक्रेताओं के आग्रह पर भंडारगृह वस्तुओं की ग्रेडिंग तथा ब्रांडिंग की जिम्मेदारी संभालते है। इसके अतिरिक्त बिक्री में सुविधा के लिए वे वस्तुओं की मिक्सिंग, ब्रांडिंग, पैकिंग भी करते है।

vii) **परिवहन व्यववस्था :** कुछ स्थितियों में भंडारगृह थोक व्यापारियों की सुविधा के लिए परिवहन की सुविधाएं भी उपलबध कराते हैं। ये उत्पादन के स्थान से सामान उठाते हैं और जमाकर्ता के अनुरोध पर उसे सुपुर्दगी के स्थान तक पहुंचाते हैं।

6.6 भंडारगृहों के लाभ

व्यावसायिक समुदाय को भंडारगृहों से कई प्रकार के लाभ होते हैं। उद्योगों अथवा व्यापार को भंडारगृहों से प्राप्त होने वाले लाभ निम्नलिखित हैं :

i) **वस्तुओं का संरक्षण तथा परिरक्षण :** व्यवसायियों को जब वस्तुओं की बिक्री की आवश्यकता नहीं होती उस समय भंडारगृह भंडारण सुविधाएं प्रदान करते हैं। यह वस्तुओं को सुरक्षित रखते हैं, उनको टूट-फूट से बचाते हैं। टूट-फुट, गुणवत्ता में गिरावट, सड़ने-गलने आदि से होने वाली हानि को न्यूनतम करते हैं। ये जहां तक संभव हो अत्यधिक आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हैं।

ii) **वस्तुओं की नियमित आपूर्ति :** चावल, गेहूं आदि जैसी अनेक उपभोक्ता सामग्रियों का उत्पादन एक विशेष मौसम में होता है, किन्तु इनकी खपत पूरे साल बनी रहती है। भंडारगृह इन मौसमी उपभोक्ता सामग्रियों की पूरे साल नियमित आपूर्ति बनाए रखने में सहायक होते हैं।

iii) **उत्पादन में निरंतरता :** भंडारगृह निर्माताओं को कच्चेमाल के भंडारण की चिंता से मुक्त कर उन्हें निरंतर उत्पादन करने की निश्चिंतता प्रदान करते हैं। वे निर्माताओं को मौसमी कच्चेमाल की आपूर्ति बिना किसी बाधा के निरंतर करते रहते हैं।

iv) **साज-संभाल में आसानी :** आधुनिक भंडारगृह, वस्तुओं के साज-संभाल के लिए अत्यधिक आधुनिक यंत्रों का प्रयोग करते हैं। भारी तथा थोक वस्तुओं को चढ़ाने तथा लादने के लिए आधुनिक मशीनों का उपयोग करते हैं जिससे साज संभाल का

खर्च कम हो जाता है। आधुनिक मशीनों के उपयोग से सामान को उतारने-चढ़ाने में होने वाले नुकसान की संभावनाएं कम हो जाती है।

v) **सुविधाजनक स्थिति :** भंडारगृह साधारणतया सुविधाजनक स्थान, जैसे- सड़क, रेल अथवा जलमार्ग के समीप स्थित होते हैं। इससे परिवहन लागत में कमी आती है।

vi) **छोटे व्यवसायियों के लिए उपयोगी :** अपना भंडारगृह बनाने के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है, जो कि छोटे व्यवसायी वहन नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में वह नाममात्र का किराया देकर सार्वजनिक भंडारगृहों में अपने कच्चेमाल अथवा निर्मित माल को रखकर उनके परिरक्षण में सक्षम हो जाते हैं।

vii) **रोजगार के अवसर :** भंडारगृह कुशल तथा अकुशल दोनों ही प्रकार के लोगों के लिए पूरे देश में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराते हैं। इससे लोगों को अपनी आय तथा जीवन स्तर को सुधारने का अवसर मिलता है।

viii) **वस्तुओं की बिक्री में सहायक :** वस्तुओं के बेचने के लिए कुछ निर्धारित कदम उठाने आवश्यक है। ऐसे में भंडारगृह, क्रेता के मन को समझते हुए वस्तुओं की ग्रेडिंग, पैकिंग तथा उन पर लेबल आदि लगाने की जिम्मेदारी भी वहन करते हैं। माल का मालिक भंडारगृह का अधिपत्र सौंप कर क्रेता को वस्तुओं का स्वामित्व हस्तान्तरित कर सकता है।

ix) **वित्तीय उपलब्धता :** भंडारगृह द्वारा जारी अधिपत्र के आधार पर व्यवसायी को बैंक आदि से आसानी से ऋण प्राप्त हो जाता है। इसके अलावा कुछ मामलों में भंडारगृह खुद ही माल रखने वाले को कुछ धान उपलब्ध करा देते हैं।

x) **हानि की जोखिम कम करना :** माल को बंधक रखकर भंडारगृह में माल सुरक्षित तथा परिरक्षित रहता है। इसके अलावा चोरी से बचाने के लिए सुरक्षा कर्मचारी रखे जाते हैं। परिरक्षण के लिए कीटनाशक दवाओं का प्रयोगकर सकते हैं। शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं के संरक्षण के लिए कोल्ड स्टोरेज आदि की व्यवस्था करते हैं। इनमें आग से बचाव के लिए अग्निशमन उपकरण भी लगे होते हैं। इनमें नुकसान होने पर वस्तु की भरपाई की भी गारंटी होती है।

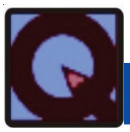

पाठगत प्रश्न 6.3

I. निम्नलिखित में से सही और गलत कथन छांटिए :

i. भंडारगृहों का मूल काम है वस्तुओं का भंडारण।

ii. भंडारगृहों में होने वाले नुकसान की भरपाई भंडारगृह नहीं करते।

iii. भंडारगृह देखभाल प्रभारी के वारंट पर बैंकों से ऋण मिल जाता है।

iv. भंडारगृह वस्तुओं के निरंतर उत्पादन तथा आपूर्ति को सुनिश्चित करते हैं।

v. भंडारगृह कोई भी रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं कराता।

II. बहुविकल्पीय प्रश्न

i. निम्न में से कौन सी आवश्यकता भंडारण की नहीं है?
क) माल की तुरंत आपूर्ति ख) माल का मौसमी उत्पादन
ग) बड़े पैमाने पर उत्पादन घ) लघु स्तर पर उत्पादन

ii. भंडारगृहों के निम्नलिखित प्रकारों में से कौन से, हवाई अड्डों तथा बंदरगाहों पर स्थित होते हैं।
क) सार्वजनिक भंडारगृह ख) सरकारी भंडारगृह
ग) बंधक भंडारगृह घ) सहकारी भंडारगृह

iii. जो भंडारगृह उत्पादकों अथवा व्यापारियों द्वारा केवल अपने माल के स्टॉक को भंडारित करने हेतु अपने स्वामित्व के अंतर्गत प्रबंधित किए जाते है, उन्हें क्या कहते हैं?
क) सरकारी भंडारगृह ख) निजी भंडारगृह
ग) सार्वजनिक भंडारगृह घ) सहकारी भंडारगृह

iv. निम्न में से कौन सा कार्य भंडारगृहों का नहीं हैं?
क) जोखिम उठाना ख) वित्तीयन
ग) माल की सुरक्षा घ) प्रत्येक ग्राहक को परिवहन सुविधा

v. निम्न में से कौन सा लाभ भंडारगृहों का नहीं है?
क) छोटे व्यवसायियों हेतु उपयोगी
ख) सुविधाजनक स्थान पर उपलब्ध
ग) रोजगार सृजन नहीं करते
घ) वित्त की उपलब्धता को सुगम बनाना

आपने क्या सीखा

- भंडारण वस्तुओं के बड़े पैमाने पर और सही तरीके से रखरखाव को सुनिश्चित करता है। इससे उत्पादन से लेकर खपत तक भंडारण करना सुनिश्चित होता है। इससे समय और स्थान की बाधाएं दूर हो जाती है। यह व्यापार की एक महत्वपूर्ण सहायक सेवा है।
- भंडारगृहों की आवश्यकता जिन कारणों से होती है, वे हैं : (i) वस्तुओं के मौसमी उत्पादन (ii) मौसमी मांग (iii) बड़े पैमाने पर उत्पादन (iv) तुरंत आपूर्ति (v) उत्पादन की निरंतरता (vi) मूल्य में स्थायित्व
- भंडारगृहों के प्रकार : (i) निजी भंडारगृह (ii) सार्वजनिक भंडारगृह (iii) सरकारी भंडारगृह (iv) बंधक भंडारगृह (v) सहकारी भंडारगृह
- आदर्श भंडारगृह की विशेषताएं : (i) सुविधाजनक स्थान पर स्थित (ii) वस्तुओं के संभाल के लिए मशीनी उपकरणों का उपयोग (iii) वस्तुओं को रखने योग्य पर्याप्त स्थान (iv) परिसंरक्षण योग्य वस्तुओं के लिए कोल्ड स्टोरेज (v) धूप, हवा, धूल, कीट आदि से वस्तुओं की रक्षा (vi) वाहनों के लिए पर्याप्त पार्किंग (vii) चौबीसों घंटे सुरक्षा व्यवस्था (viii) अग्निशमन यंत्रों की सुविधा

- भंडारगृह के कार्य : (i) वस्तुओं का रखरखाव (ii) वस्तुओं का परिरक्षण (iii) जोखिम उठाना (iv) वित्तीय सुविधाएं प्रदान करना (v) प्रक्रमण (vi) ग्रेडिंग तथा ब्रांडिंग (vii) परिवहन
- भंडारगृहों के लाभ : (i) वस्तुओं का संरक्षण तथा परिरक्षण (ii) वस्तुओं की नियमित आपूर्ति (iii) उत्पादन में निरंतरता (iv) सुविधाजनक स्थान पर स्थित (v) आसान साज-संभाल (vi) छोटे व्यवसायियों के लिए उपयोगी (vii) वस्तुओं को बेचने में आसानी (viii) वित्तीय सुविधाएं उपलब्ध (ix) हानि का जोखिम कम करना

पाठांत प्रश्न

1. भंडारण से क्या तात्पर्य है?
2. भंडारगृह की आवश्यकताओं को समझाइए।
3. एक आदर्श भंडारगृह की छह विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
4. विभिन्न प्रकार के भंडारगृहों का वर्गीकरण कीजिए तथा उन्हें संक्षेप में समझाइए।
5. निजी तथा सार्वजनिक भंडारगृह में अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. भंडारगृह के कार्यों पर प्रकाश डालिए।
7. सार्वजनिक भंडारगृह किसे कहते हैं? सार्वजनिक भंडारगृह के तीन अर्थ बताइए।
8. व्यवसायियों के लिए भंडारगृह के लाभ बताइए।
9. एक बंधक भंडारगृह किस प्रकार से आयात के लिए सुविधाजनक होता है।
10. भंडारण एक महत्वपूर्ण सहायक सेवा है। साठ शब्दों में व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1 (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) गलत (v) गलत (vi) सही

6.2 (i) सरकारी (ii) सरकार (iii) निजी (iv) बन्दरगाह (v) बंधक

6.3 I. (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) सही (v) गलत

II. (i) घ (ii) ग (iii) ख (iv) घ (v) ग

आपके लिए क्रियाकलाप

- एक साधारण स्टोर तथा भंडारगृह में अंतर बताइए। एक स्टोर किस प्रकार से एक भंडारगृह से भिन्न है? बताइए।